Role of Sangti vadya in vocal and instrumetal music

संगीत कला को गायन, वादन और नृत्य तीन कलाओं की त्रिवेणी कहा गया है। इसका कारण यह है कि प्राचीन विद्वानों के अनुसार गायन, वादन और नृत्य इन तीनों के समुचित सुमेल से ही संगीत कला सम्पूर्णता को प्राप्त करती है।

संगीत के इन तीनों अंगों में से कुछ विद्वानों ने गायन को प्रमुख माना है परंतु अधिकांश ने वादन को प्रमुखता प्रदान की है। इसका कारण यह है कि वादन और नृत्य दोनों को पूर्ण रूप से प्रभावशाली होने के लिए वाद्यों के सहयोग की आवश्यकता रहती है जबकि वादन कला को अपना प्रभाव उत्पन्न करने के लिए गायन और नृत्य का सहयोग अपेक्षित नहीं रहती।

मानव सभ्यता के प्रारंभिक विकास काल में जब मानव ने स्वभाविक और प्राकृतिक रूप से गाना और नाचना सीखा तभी से वह अपने इस प्रारंभिक गायन और नृत्य को अधिक सुंदर बनाने के लिए उसे अनेक प्रकार की ध्वनियों द्वारा सजाने का प्रयास करने लगा। इन ध्वनियों के लिए पहले-पहल उसने ताली बजाकर या अपने शरीर के अलग-अलग भागों पर हाथों से प्रहार करके विभिन्न प्रकार की ध्वनियों की प्राप्ति की लेकिन फिर विकास के क्रमिक रूप के अंतर्गत समय के साथ-साथ उसने इस उद्देश्य के लिए कुछ प्रारंभिक वाद्य बना लिए जिनका विकास उसने अपने आस-पास

Page No.
Date

उपलब्ध ~~बिल्कक~~ पत्थर, लकड़ी और धातु आदि अनेक प्रकार की सामग्रीयों द्वारा किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वाद्यों द्वारा गायन और नृत्य को सहयोग देने की प्रथा आदि काल से ही चली आ रही है। कुछ आगे चलकर जब संगीत में सोलो (solo), एकांकी, अथवा एकल वादन की परंपरा का विकास हुआ तो यहाँ भी प्रमुख वाद्य की संगति या सहयोग के लिए अन्य वाद्यों का प्रयोग किया जाने लगा।

1. संगति अथवा संगत का अर्थ – गायन वादन और नृत्य को पूर्ण रूप से प्रभावशाली बनाने के लिए जब इनके साथ विभिन्न प्रकार के वाद्य बजाए जाते हैं तो इसे संगीत के व्यवहारिक भाषा में संगति करना अथवा संगत करना कहा जाता है। संगति शब्द का शाब्दिक अर्थ साथ-साथ चलना होता है। अतः इस प्रकार गायन, वादन और नृत्य में जब अन्य वाद्य उसी स्वर अथवा लय ताल का कुशलता पूर्वक अनुसरण करते हुए मुख्य कलाकार को सहयोग देते हुए चलते हैं तो इसी क्रिया को ~~बाद्य~~ वाद्य संगति अथवा संगत करना कहते हैं।

प्राचीन काल में संगीत कला में ~~जब~~ जहाँ गायन, वादन और नृत्य तीनों का सुमेल माना जाता था वहीं आजकल नृत्य कला को अन्य दोनों कलाओं से अलग एक स्वतंत्र कला मान लिया गया है।

जो कि अपने प्रभाव के लिए गायन और वादन पर आश्रित रहती है। इस प्रकार अधिकांश आधुनिक विद्वान आजकल संगीत शब्द का अभिप्राय केवल गायन और वादन से ही लेते हैं।

इस प्रकार यहाँ हम कण्ठ संगीत और वाद्य संगीत में वाद्य संगति की भूमिका पर विचार करेंगे और संक्षेप में जानने का प्रयास करेंगे कि वाद्य संगति द्वारा किस प्रकार गायन और वादन को अनेक प्रकार से सहयोग देते हुए सुसज्जित और पुष्ट रूप प्रदान किया जाता है।

गायन और वादन के साथ अन्य वाद्यों की संगति मुख्य रूप से दो प्रकार से होती है :-

1. लय और ताल की संगति
2. स्वर संगति

* लय और ताल की संगति :- इसके अंतर्गत गायन और वादन की लय का अनुसरण करते हुए विभिन्न वाद्यों पर उसके साथ प्रयुक्त होने वाले ताल को विभिन्न प्रकार के प्रहारों अथवा बोलों द्वारा दर्शाया जाता है। आज के समय में संगीत कला के विभिन्न रूपों में से शास्त्रीय (और उप शास्त्रीय) संगीत के साथ इस उद्देश्य के लिए तबला, मृदंग तथा पखावज जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है जबकि सुगम संगीत और चित्रपट संगीत में इस उद्देश्य के लिए ढोलक, तबला,

Page No.
Date

ताल, घड़ा, मंजीरा, ~~घुंघर~~ घुंघरु तथा इसके साथ-साथ अनेक प्रकार के पाश्चात्य वाद्य जैसे- बोंगो, कोंगो, ड्रम सेट, तथा ऑक्टोपैड आदि का प्रयोग किया जाता है। लोक संगीत के अंतर्गत इस उद्देश्य के लिए ढोलक, घड़ा और घुंघरु आदि के साथ-साथ अवनद्ध वाद्यों में विभिन्न प्रकार के ढोल, डफ, डफली, मादल, नगारा और ~~ढ~~ ढड आदि अनेक प्रकार के लोक वाद्य प्रयुक्त होते हैं जबकि घन वाद्यों के अंतर्गत मंजीरा और घुंघरु आदि के साथ डंडीयाँ, ~~वि~~ चिमटा, करताल (खडताल), झांझ और इसी प्रकार के अन्य वाद्य प्रयोग में लाये जाते हैं।

★ स्वर संगति → गायन और वादन में स्वर का सहयोग देने के लिए सुषिर, तंत और वितत वाद्यों का प्रयोग किया जाता है जिसमें शास्त्रीय और उप- शास्त्रीय संगीत के साथ तानपुरा, सारंगी, हारमोनियम, वायलन, स्वरमंडल तथा सुगम और चित्रपट संगीत में उपरोक्त वाद्यों के साथ-साथ बाँसुरी, सारोद, संतूर, दिलरुबा, इसराज, तुऊस, सरंदा आदि भारतीय वाद्य और ऑरगन, सैक्सोफोन, माऊथऑरगन, एकॉरडिब, पियानो और कीबोर्ड जैसे पश्चमी वाद्य काम में लिए जाते हैं। लोक संगीत में इस उद्देश्य के लिए अलगोजे, तुबी, बड़ा एकतारा, दो तारा और अनेक प्रकार की सारंगीयों का वादन भी होता है।

Page No.
Date

2. गायन और वादन की विभिन्न विधाओं में लय-ताल की संगति की सामान्य विधि और उसका महत्व :- शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत ध्रुपद और धमार शैली के साथ मृदंग अथवा पखावज पर संगत की जाती है जिसमें सामान्य विलम्बित और मध्य लय का प्रयोग किया जाता है और खुले बोलों के ताल जैसे कि - चार ताल, सूलताल, तीव्रा, रुद्र और मत आदि तालों में गायन, वादन होता है। इनमें ताल का साधारण ठेका ना बजाकर अकसर धिं नक तक तिट आदि बोलों पर आधारित लयकारीयाँ बजाई जाती हैं। ख्याल शैली में विलम्बित ख्याल के साथ तबले पर एकताल, झुमरा, तिलवाड़ा आदि तालों में ताल का सामान्य परंतु भरावदार ठेका लगाया जाता है। जिसमें मुखड़े के समय छोटे-छोटे सुंदर बोल बजाए जाते हैं इसके इलावा द्रुत ख्याल और तराने में तबले पर सामान्य ठेका बजाने के साथ-साथ आवश्यकता अनुसार एक से लेकर अनेक ~~आव~~ प्रकार आवर्तनों की लयकारीयाँ दिखाई जाती है।

वादन में मसीतखानी और रजाखानी गतों के साथ और अन्य गतों के साथ तीनताल, एकताल, झपताल, रूपक ताल, आड़ा चार ताल और अन्य तालों में ~~साम~~ तबले पर सामान्य भरे हुए ठेके के इलावा अनेक प्रकार की लयकारीयों का भी भरपुर प्रदर्शन होता है।

इसी प्रकार उप-शास्त्रीय संगीत में ठुमरी और होरी आदि के साथ जहाँ दीपचन्दी और जत आदि तालों में विलम्बित और मध्य लय में तबले पर सामान्य ठेका लगता है वहीं अंतरे के द्रुत कहरवा में विभिन्न प्रकार की लग्गीयाँ और रेले लगाए जाते हैं। इसके इलावा तंत्रकारी में धुन और गायन में कजरी, चैती और झुला जैसी शैलीयों के साथ तबले पर कहरवा, दादरा और खेमटा के विभिन्न रूपों में अनेक प्रकार की लग्गीयाँ और सुंदर तिहाईयों द्वारा संगत होती है।

सुगम संगीत की विभिन्न शैलीयों में आवश्यकता अनुसार तबला और ढोलक आदि पर कहरवा, दादरा, रूपक, झपताल, चांचर और कभी-कभी पश्चमी तालों में समय और आवश्यकता अनुसार अनेक प्रकार के सुंदर ठेके और बोल बजाए जाते हैं इसी प्रकार लोक संगीत के अंतर्गत कहरवा, दादरा और अन्य तालों में ढोल, ढोलक और अन्य लोक वाद्यों पर जोशीली संगत की जाती है।

3. गायन और वादन की विभिन्न विधाओं में स्वर-संगति की सामान्य विधि :- शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय गायन में सारंगी, वायलन और हारमोनियम पर अकसर गायकी का अनुसरण किया जाता है परंतु बीच-बीच में इनके वादक अपनी ओर से छोटे बड़े सुंदर टुकड़ों, आलाप, बहलावा और तानों के सुंदर प्रयोग द्वारा जहाँ गायन

Page No.
Date

के प्रभावशाली बनाते हैं वहाँ गायक का मनोबल और आत्मविश्वास भी बढ़ाते चलते हैं। इसी बीच तानपुरा वादक भली प्रकार मिले हुए वाद्य पर पुष्ट स्वराधार देते चलते हैं।

सुगम और चित्रपट संगीत में स्वरवाद्यों की संगत इसके सरल और भावपूर्ण रूप के अनुकूल होती है। अनेक बार हारमोनियम पर संगत करते समय पश्चमी संगीत की Chord और Harmony पद्धति का भी सहारा लिया जाता है।

लोक संगीत में विभिन्न प्रकार के लोक वाद्यों पर स्वर संगति गीत की प्राकृति और स्वरूप के अनुकूल होती है। स्थाई और अंतरे के बीच में अनेक बार Interlude के रूप में छोटे-छोटे सुंदर टुकड़ों का प्रयोग किया जाता है।

4. गायन और वादन में वाद्य संगति का महत्व :-
गायन और वादन में विभिन्न प्रकार के वाद्य संगति के द्वारा जहाँ मुख्य कलाकार को लय ताल और स्वर का मनमोहक (आकर्षक) आधार प्रदान किया जाता है वहीं उसके आत्मविश्वास और मनोबल में भी वृद्धी होती है। अच्छी संगत से उसकी कल्पनाशीलता और रचनात्मका को एक नई दिशा मिलती है। गायन-वादन के बीच में अक्सर संगत--कारों द्वारा अपनी कला प्रदर्शन के समय मुख्य कलाकार को सांस लेने का और अल्प

Page No.
Date

कालीन विश्राम का समय मिल जाता है। श्रोताओं को भी कला प्रदर्शन में विविधता और रचनात्मकता का नया ही रूप देखने को मिलता है।

5- सारांश :- इस प्रकार गायन और वादन के ~~सर्व~~ श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए मुख्य कलाकार के साथ - साथ संगतीकारों का भी अपने-2 क्षेत्रों में दक्ष और कुशल होना नितांत आवश्यक है और साथ ही यह भी आवश्यक है सभी कलाकार मुख्य कलाकार के अपना हार्दिक सहयोग प्रदान करें और अपना व्यक्तिगत कला प्रदर्शन उतना ही करें जितना कि समय और प्रस्तुत की जा रही शैली के अनुरूप हो। इस प्रकार सभी कलाकार जब अपने व्यक्तिगत हितों को अलग रखकर पूरे कार्यक्रम की सफलता की दृष्टि से सम्पूर्ण और ईमानदारी के संगत करते हैं, तभी संगीतकला का प्रभाव दोगुणा, चौगुणा होकर श्रोताओं को अलौकिकता की ओर अग्रसर करते हुए उन्हें परमानंद की प्राप्ति करवा सकता है।